Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar
Our Website-
https://thehindipage.com/blog/
Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria
Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 16
शिरीष के फूल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. 'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है ?' इस पंक्ति में अवधूत शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है –

(क) कबीर

(ख) शिरीष

(ग) आरग्वध

(घ) गांधी

उत्तर: (घ) गांधी

प्रश्न 2. 'मेघदूत' किसकी रचना है?

(क) कबीर

(ख) तुलसी

(ग) कालिदास

उत्तर: (ग) कालिदास

प्रश्न 3. 'शिरीष के फूल' निबन्ध है –

(क) ललित निबन्ध

(ख) वस्तुनिष्ठ निबन्ध

(ग) आलोचनात्मक निबन्ध

(घ) ऐतिहासिक निबन्ध

उत्तर: (क) ललित निबन्ध

प्रश्न 4. प्राचीन 'कर्णाट राज्य' का आधुनिक नाम क्या है?

(क) कर्नाटक

(ख) तमिलनाडु

(ग) केरल

(घ) आसाम

उत्तर: (क) कर्नाटक

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी ' पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर: आशय यह है कि धरती बिना धुएं के अग्निकुंड की तरह तप रही थी।

प्रश्न 2. शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में कैसा माना जाता है?

उत्तर: शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में अत्यन्त कोमल माना जाता है।

प्रश्न 3. 'कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे ,' लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर: शिरीष भीषण गर्मी से प्रभावित होकर फूलता रहता है, उसी प्रकार कबीर सांसारिक सुख-दुःख से परे तथा मस्तमौला थे।

प्रश्न 4. ऊधो को लेना न माधो का देना का अर्थ लिखिए।

उत्तर: ऊधो को लेना न माधो का देना' का अर्थ है – संसार के राग-द्वेष से मुक्त अनासक्त जीवन बिताना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास ' इस पंक्ति को भावार्थ लिखिए।

उत्तर: पलाश के फूल वसंत के आने पर दस-पन्द्रह दिन फूलकर मुरझा जाता है। उसी प्रकार इस भौतिक संसार में मनुष्य कुछ दिनों के लिए आता है और अंततः मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न 2. 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना' इस पंक्ति में तुलसीदास जी ने क्या संदेश दिया है?

उत्तर: तुलसीदास ने इस पंक्ति में संसार के शाश्वत अटल सत्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु के बारे में बताया है। जो फलता है, वह झड़ जाता है तथा जो बूढ़ा हो जाता है , वह मर जाता है। यह प्रकृति का नियम है। इसका उल्लंघन नहीं हो सकता। तुलसी ने संदेश दिया है। कि इसको स्वीकार करके निर्लिप्त जीवन बिताना चाहिए।

प्रश्न 3. लेखक के अनुसार कवि के लिए कौन से गुण आवश्यक हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार कवि के लिए फक्कड़ और मस्तमौला होना आवश्यक है। उसमें अनासक्त योगी के साथ ही एक विदग्ध प्रेमी के गुणों का मेल होना जरूरी है। जो योगी के समान विरक्त भाव रख सकता है तथा प्रेम के आन्तरिक सच्चे स्वरूप को जानता है , वही कवि हो सकता है।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

प्रश्न 4. लेखक ने 'शिरीष के फूल' को कालजयी अवधूत की तरह क्यों बताया है?

उत्तर: अवधूत अनासक्त होता है। वह संसार के सुख-दु:ख में समरस होकर जीता है। इसी कारण वह काल को जीतने में समर्थ होता है। शिरीष का फूल भी ऐसा ही है। जब चारों ओर भीषण गर्मी पड़ती है। लू के थपेड़े लगते हैं, धरती निर्धूम अग्निकुंड बन जाती है। तब भी शिरीष हरा-भरा तथा फूलों से लदा रहता है। जब कोई फूल खिलने का साहस नहीं करता, उस समय भी शिरीष फूलों से लदा रहता है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर: द्विवेदी जी ने गांधी जी में एक अवधूत के दर्शन किए हैं। अवधूत मस्तमौला होता है। वह अनासक्त होता है। कठोर सांसारिक स्थितियाँ भी उसको प्रभावित नहीं कर पार्ती। गांधी जी साधारण मनुष्य नहीं थे। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। उनके सामने अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ आईं किन्तु वे उनको प्रभावित नहीं कर सकीं। जब भारत स्वतंत्र हुआ तो देश का विभाजन हुआ। उस समय भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए, लोग भयभीत हुए, काँपते रहे। जब दिल्ली स्वतंत्रता का उत्सव मना रही थी तब गांधी ने नोआखाली में दंगाइयों के बीच हिंसा की आग को अकेले ही बुझाने में लगे थे। उन्होंने अपने लिए सरकारी सुरक्षा का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था और कहा था- मेरा रक्षक तो राम है।

गांधी जी के व्यक्तित्व में कोमल और कठोरता का समन्वय था। वह सुख-दु:ख, राग-द्वेष, अपना-पराया आदि में समान रूप से रम सकते थे। वह इन बातों से ऊपर उठ चुके थे। उनमें आसक्ति नहीं थी। वह इनसे अप्रभावित रह सकते थे। सुख उनको सुख नहीं देता था तो दु:ख उनको दु:खी नहीं करता था। वह संकट के समय भी अविचलित रह सकते थे। यह तटस्थता और स्थितप्रज्ञता ही उनकी शक्ति थी। गांधी जी जब स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन चलाते थे तो उनका व्यवहार कठोर होता था। यद्यपि वह अंग्रेजों के प्रति अमानवीय नहीं था किन्तु उसमें अनुचित के प्रति दृढ़तापूर्ण विरोध था। गान्धीजी अपने देश के लोगों के प्रति ही नहीं सभी के प्रति अत्यन्त कोमल थे। एक ही धोती होने के कारण मलिन रहने के लिए विवश स्त्री को देखकर गाँधी जी ने वस्त्रों का परित्याग कर दिया था तथा केवल एक लँगोटी धारण करते थे।

प्रश्न 2. 'शिरीष के फूल' ललित निबन्ध के माध्यम से द्विवेदी जी ने क्या संदेश दिया है ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 'शिरीष के फूल' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित ललित निबन्ध है। द्विवेदी जी शांति निकेतन में किसी वृक्ष की छाया में बैठकर लिख रहे हैं , वहाँ चारों तरफ शिरीष के वृक्ष हैं। ग्रीष्म ऋतु है। भीषण गर्मी पड़ रही है तथा लू चल रही है। इस भयानक गर्मी में भी शिरीष का वृक्ष हरा-भरा है तथा वह पूरी तरह पुष्पों से लदा है। इस ऋतु में जब अन्य पुष्प खिलने का साहस नहीं करते, शिरीष पुष्प-गुच्छों से लदा-फदा है। उसकी यह जीवनी-शक्ति द्विवेदी जी को विस्मित करती है। 'शिरीष के फूल' द्विवेदी जी का एक संदेशपरक निबन्ध है। इसमें लेखक ने शिरीष के माध्यम से निस्पृह जीवन जीने का संदेश दिया है। कठोर तथा विपरीत परिस्थितियों में भीषण ताप तथा लू में शिरीष का हरीतिमा युक्त पुष्पित होना देखकर, इसका कारण जानने के लिए व्यग्र लेखक को पता चलता है कि जीवन के प्रति स्पृहता, तटस्थता, अनासक्ति, स्थितप्रज्ञता आदि गुणों वाला शिरीष एक अवध [त है। शिरीष के माध्यम से लेखक संदेश देना चाहता है कि जीवन का सच्चा आनन्द एक अवधूत के समान जीवन बिताने में ही है।

मनुष्य को लोलुपता का त्याग करना चाहिए। न उसको अर्थ लोलुप होना चाहिए और न पद लोलुप । उसको समझना चाहिए कि जरा और मृत्यु परिवर्तनशील है पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी के हित में स्थान छोड़ना चाहिए तथा उसको उस स्थान पर स्थापित करना चाहिए। यदि पुरानी पीढ़ी के लोग ऐसा नहीं करेंगे तो नई पीढ़ी उनको बलात् उनके स्थान से हटा देगी। अतः जीवन का सच्चा आनन्द पाने के लिए मनुष्य को सुख-दु:ख तथा राग-द्वेष में समत्व भाव प्रदर्शित करना चाहिए तथा त्यागमय जीवन बिताना चाहिए। द्विवेदी जी 'शिरीष के फूल ' शीर्षक निबन्ध में यही संदेश दे रहे हैं।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

प्रश्न 3. ललित निबंध के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए 'शिरीष के फूल' निबन्ध की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: ललित निबन्धकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम उल्लेखनीय है। शिरीष के फूल द्विवेदी जी के कल्पलता निबन्ध संग्रह में संकलित ललित निबन्ध है। 'शिरीष के फूल ' निबन्ध में मानवतावादी दृष्टिकोण तथा कवि हृदय की छाप है। इससे उनके पांडित्य , बहुज्ञता तथा विविध विषयों से सम्बन्धित ज्ञान का पता चलता है। द्विवेदी जी के अन्य निबंधों की तरह इसमें भी प्रकृति को माध्यम बनाकर मानवीय आदर्शों को व्यंजित किया गया है। निबन्धकार ने भीषण गर्मी और लू में भी हरे-हरे और फूलों से लदे रहने वाले शिरीष की तुलना अवधूत से की है। इसके माध्यम से जीवन के संघर्षों में अविचलित रहकर लोकहित में लगे रहने तथा कर्तव्यशील बने रहने के श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों पर जोर दिया। जरा और मृत्यु संसार के अटल सत्य हैं। उनको स्वीकार कर धन और पद की तृष्णा से मुक्त रहकर ही जीवन का सुख प्राप्त किया जा सकता है। शिरीष के अपने स्थान पर जमे रहने वाले कठोर फलों के द्वारा भारत के सत्ता लोलुप नेताओं पर व्यंग्य प्रहार किया गया है।

अनासक्ति तथा फक्कड़ाना मस्ती को जीवन के लिए आवश्यक माना गया है। कबीर को मस्तमौला तथा कालिदास को अनासक्त कहने के बाद लेखक को गाँधी जी की याद आती है। गाँधी अवधूत थे। रक्तपात , उपद्रव, लूट-खसोट और खून-खच्चर में अविचलित रह सके थे। ललित निबन्ध में विषय की अपेक्षा भाषा-शैलीगत लालित्य महत्त्वपूर्ण होता है। शिरीष के फूल में बुद्धि की अपेक्षा उनके मन को प्रभावित किया गया है। इसकी भाषा सरल और सरस है तथा शैली कवित्वपूर्ण तथा लालित्य युक्त है।

प्रश्न 4. "सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं। जिनमें प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं" द्विवेदी जी के इस कथन में क्या संकेत निहित है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: संसार के दो अति प्रामाणिक सत्य हैं – वृद्धावस्था तथा मृत्यु। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है कि जो जन्म लेता है , वह मरता अवश्य है। अपने पुत्र की मृत्यु पर एक स्त्री ने गौतम बुद्ध से उसे जीवित करने की प्रार्थना की। बुद्ध ने कहा- अवश्य, परन्तु तुम एक ऐसे घर से एक मुट्ठी सरसों माँग लाओ जिसमें कभी कोई मरा न हो। उस स्त्री ने हर घर में पूछा किन्तु उसको ऐसा कोई घर न मिला। मृत्यु की सच्चाई उसकी समझ में आ गई थी। सन्त कबीर ने कहा है- 'मौत बुढ़ापा आपदा सब काहू को होय " मृत्यु निरन्तर प्रहार कर रही है। वृद्ध , कमजोर मनुष्य तो यमलोक नित्य प्रस्थान कर रहे हैं। जिनकी जीवनी शक्ति थोड़ा प्रबल होती है , वे बच जाते हैं किन्तु समयानुसार जब वृद्धावस्था और दुर्बलता उनको घेर लेते हैं तो वे भी मृत्यु के सामने परास्त हो जाते हैं। द्विवेदी जी ने इस कथन में मृत्यु की अटलता को व्यक्त किया है। संसार में जिस किसी को भी जन्म होता है। वह मृत्यु की अवहेलना नहीं कर सकता , वृद्धावस्था से बच नहीं सकता। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा सं सार में आश्चर्य क्या है? युधिष्ठिर को उत्तर था- हर दिन प्राणी यमलोक जाते हैं। जो शेष रह गए हैं वे सोचते हैं कि उनको सदा इस धरती पर ही रहना है। इससे बड़ा आश्चर्य कुछ नहीं है। लेखक का कहना है कि मनुष्य को समझना चाहिए कि संसार परिवर्तनशील है। वृद्धावस्था की ओर बढ़ रही पुरानी पीढ़ी को आने वाली पीढ़ी के लिए स्थान छोड़ देना चाहिए। वृद्धत्व और मृत्यु अवश्य आती हैं। अतः अधिकार लिप्सा उचित नहीं है। जीवन को तटस्थतापूर्वक जीने तथा सुख-दुःख में समभाव रखने में ही जीवन का सुख है। अत: काल के संकेत की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 16 : शिरीष के फूल - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय

भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन और इतिहास के आख्याता , प्रसिद्ध निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं सफल अध्यापक रहे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई० में बलिया जिले (उत्तरप्रदेश) के 'आरत दुबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी एवं माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था। इनके

जन्म का नाम बैजनाथ था जन्म के समय पिता को किसी मुकदमें में एक हजार रुपये की प्राप्ति होने पर इनके पिता ने इनका नाम हजारी प्रसाद रख दिया इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने संस्कृत , बंगाली हिन्दी, अंग्रेजी, भाषाओं का गहन अध्ययन किया ये ज्योतिश शास्त्रविद भी थे। ये शांतिनिकेतन, काशी एवं पंजाब के विश्वविद्यालयों में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। सन् 1949 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय ने डीलिट की उपाधि से सम्मानित किया एवं सन् 1957 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण' से अलंकृत किया 19 मई सन् 1979 को आपका देहावसान हुआ।

द्विवेदी जी का साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक एव उदार है उनका मानना है कि साहित्य मानव सापेक्ष है। मनुष्य को क्षुद्रता और संकीर्णता से उबारकर , सात्विक व्यापक भावभूमि पर प्रतिष्ठित करना साहित्य का लक्ष्य है द्विवेदी जी का कहना है कि मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके , जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके , जो हृदय को परदुःख कातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।

द्विवेदी जी ने आलोचना, निबन्ध, इतिहास, उपन्यास, संस्कृति आदि विविध क्षेत्रों में अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है । इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं- निबन्ध- 'अशोक के फूल', कल्पलता, 'विचार और वितर्क, 'कुटज, 'विचार- प्रवाह', 'आलोक पर्व। 'उपन्यास -बाणट्ट की आत्मकथा, 'चारुचन्द्रलेख, 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा। आलोचना, साहित्येतिहास 'सूर- साहित्य', 'कबीर, 'नाथ सम्प्रदाय', 'मध्यकालीन बोध का स्वरूप , कालिदास की लालित्य योजना , 'साहित्य सहचर, 'साहित्य का धर्म, हिन्दी साहित्य की भूमिका, 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास। संपादित -नाथ - सिद्धों की बानियाँ, 'संदेश रासक, 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, 'विश्वभारती (शांतिनिकेतन पत्रिका का सम्पादन)। धर्म एवं संस्कृति विषयक - प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद ', 'मध्य-कालीन धर्म साधना. 'सहज साधना।

पाठ परिचय

प्रस्तुत ललित निबन्ध 'शिरीष के फूल लेखक के 'कल्पलता नामक निबन्ध संग्रह से संकलित है। यह संदेश प्रधान निबन्ध है, जिसमें द्विवेदी जी ने आँधी, लू और गरमी की प्रचण्डता में अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौन्दर्य बिखेरने वाले शिरीष की तुलना अवधूत से करते हुए मनुष्य की अजय जिजीविषा और तुमुल कोलाहल , संघर्ष के बीच धैर्यपूर्वक लोक-चिन्तन हित रह कर्तव्यशील रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है। लेखक ने शिरीष के माध्यम से इस दार्शनिक सत्य को भी अभिव्यक्त किया है कि मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि संसार परिवर्तनशील है और परिवर्तन की गति के अनुरूप अपने को ढाल लेना ही अच्छा है। संसार का सत्य यही है कि जो वस्तु एक दिन पल्लवित और पुष्पित हुई है उसका झड़ना निश्चित है। मनुष्य को अनासक्त भाव से जीवन यापन करना चाहिए। जो जितना अनासक्त हो सकता है , वह उतना ही अधिक समाज के लिए योगदान दे सकता है। अनासक्ति के साथ-साथ फक्कड़ाना मस्ती भी जरूरी है। कबीर के फक्कड़ व्यक्तित्व की तुलना अवधूत से करने के बाद वे गाँधी को भी इसी श्रेणी में रखते हैं। उनके अनुसार कालिदास भी अनासक्त कवि थे। इसलिए वे कालजयी हो सके।

मूल पाठ

जहाँ बैठ के यह लेख लिख रहा हूँ उसके आगे पीछे दाँए-बाए , शिरीष के अनेक पेड़ हैं जेठ की जलती धूप में , जबकि धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी , शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार (वनचंपा) और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत है। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पन्द्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाष की भाँति। कबीर दास को इस तरह पन्द्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़ "दिन दस फूला, फूलिके खंखड़ भया पलास"। फूल है शिरीष। वसन्त के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक तो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है , एकमात्र शिरीष

कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र-प्रचार करता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ढूँठ भी नहीं हूं। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ी हिल्लोल जरूर पैदा करते हैं।

शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस जिन मंगल-जनक वृक्षों को अपनी वृक्ष-वाटिका की चहारदीवारी के पास लगाया करता था , उनमें एक शिरीष भी है । (वृहत् संहिता 5513) अशोक , अरिष्ट (रीठा का वृक्ष). पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घन मसृण हरीतिमा से परिवेष्टित वृक्ष वाटिका जरूर बड़ी मनोहर दिखती होगी वात्स्यायन ने (काम सूत्र में) बताया है कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला (दोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने कवि बकुल (मौलसिरी) के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे , पर शिरीष भी क्या बुरा है? डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूर होती है , पर उसमें झूलनेवालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम ख्याल नहीं करते। मैं तुंदिल नरपतियों की बात नहीं कह रहा हूँ, वे चाहें तो लोहे का पेड़ बनवा लें।

शिरीष का फूल संस्कृत-साहित्य में बहुत कोमल माना गया है मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचारित की होगी उनका कुछ इस पुष्प पर पक्षपात था (मेरा भी है) कह गए हैं. शिरीष पुष्प केवल भौरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है , पक्षियों का बिलकुल नहीं- पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं नः पुन पतत्रिणाम्। अब मैं इतने बड़े कवि की बात का विरोध कैसे करूँ ? सिर्फ विरोध करने की हिम्मत न होती तो भी कुछ कम बुरा नहीं था। यहाँ तो इच्छा भी नहीं है खैर , दूसरी बात कह रहा था शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है , शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

मैं सोचता हूँ पुराने की यह अधिकार- लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अति परिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी- धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा, सो झरा जो बरा, सो बुताना। मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है सुनता कौन है?

महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरन्त प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है । मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं वहीं देर तक बने रहें तो काल देवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे । हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुहँ किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमें कि मरे।

कई एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीश एक अद्भुत अवधूत है दुःख हो सुख, वह हार नहीं मानता । न ऊधो का लेना, न माधो का देना जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपने लिए रस खींचते रहते हैं मौज में आठों याम मस्त रहते है। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता हैं जरूर खींचता होगा, नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल ततुंजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था अक्धूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे मस्त और बेपरवाह , पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और मेघदूत का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका. जो फक्कड़ नहीं बन सका , जो किए-कराए का लेखा- जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है? कहते हैं कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिकादेवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक

कवि ब्रह्मा थे, दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों को दिया , दूसरे ने रामायण और तीसरे ने महाभारत को। इनके अतिरिक्त और कोई यदि कवि होने का दावा करे तो मैं कर्णाट-राज की प्यारी रानी उनके सिर पर अपना बायाँ चरण रखती हूँ (तेषां मूर्ध्नि ददामि वामचरणं कर्णाट- राजप्रिया)। मैं जानता हूँ कि इस उपालम्भ से दुनिया का कोई कवि हारा नहीं है. पर इसका मतलब यह नहीं कि कोई लगा नहीं तो उसे डांटा भी न जाए पर मैं कहता हूं कवि बनना मेरे दोस्तो तो फक्कड़ 1. बनो। शिरीष की मस्ती की ओर देखो: लेकिन अनुभव ने मुझे बताया है कि कोई किसी की सुनता नहीं। मरने कालिदास वजन ठीक रख सकते थे क्योंकि वे अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय पा चुके थे। कवि होने से क्या होता है ? मैं भी छंद बना लेता हूँ, तुक जोड़ लेता हूँ और कालिदास भी छंद बना लेते थे तुक भी जोड़ ही सकते होंगे इसलिए हम दोनों एक श्रेणी के नहीं हो जाते। पुराने सहृदय ने किसी ऐसे ही दावेदार को फटाकरते हुए कहा था -वयमपि कवयः कवयः कवयस्ते कालिदासद्याः। मैं तो मुग्ध और विस्मय-विमूढ़ होकर कालिदास के एक-एक श्लोक को देखकर हैरान हो जाता हूँ। अब इस शिरीष के फूल का ही एक उदाहरण लीजिए। शकुन्तला बहुत सुंदर थी। सुंदर क्या होने से कोई हो जाता है ? देखना चाहिए कि कितने सुंदर हृदय से वह सौन्दर्य डुबकी लगाकर निकला है। शकुन्तला कालिदास के हृदय से निकली थी। विधाता की ओर से कोई कार्पण्य नहीं था , कवि की ओर से भी नहीं। राजा दुष्यन्त भी अच्छे-भले प्रेमी थे।

उन्होंने शकुन्तला का एक चित्र बनाया था , लेकिन रह-रहकर उनका मन खीझ उठता था। उहूँ , कहीं-न-कहीं कुछ छूट गया है। बड़ी देर के बाद समझ में आया कि शकुन्तला के दोनों कानों में उस शिरीष पुष्प को देना भूल गए हैं , जिसके केसर गंडस्थल तक लटके हुए थे , और रह गया हैं शरच्चन्द्र की किरणों के समान कोमल और शुभ्र मृणाल का हार।

कालिदास सौन्दर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे , दुःख हो कि सुख , वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच लेते थे, जो निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान् थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इस श्रेणी की अनासक्त आधुनिक हिन्दी के कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवीन्द्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा है- राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो , उसकी शिल्पकला कितनी ही सुन्दर क्यों न हो , वह यह नहीं कहता कि हमें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है। यही बताना उसका कर्तव्य है। फूल हो या पेड़ , वह अपने-आप में समाप्त नहीं है वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है, एक इशारा है।

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन धूप. वर्षा, आँधी, लू, अपने आप में सत्य नहीं है? हमारे देश के ऊपर से जो यह मारकाट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है । अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों , मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों सम्भव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है- हाय वह अवधूत आज कहाँ है?

THE HINDI PAGE
जानें कुछ नया
www.thehindipage.com

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg